इंसानियत

कभी- कभी जीवन के किरणों से,
आता है मन में वर्णों का मेला।
मन के आर्द्रता से बना यह इंद्रधनुष,
डालते है प्रकाश, दूसरो के जीवन में भी।

दिया एक नया नाम, इसको,
बुलाया हम एक साथ इसे 'इंसानियत'।
मानव की अंधेरे भरी आँखों को,
सजाते है यह, अपने साथ- वर्ण किरणो डालकर।

काँटो भरी यह ज़िंदगी की राह,
भरते है प्यार और सहानुभूति की फूलो से।
सिखाया मूल्यो को एक- एक यात्रा में,
बचाया हमारे पाँव को, दर्द के शोलों से।

लेकिन कहाँ है आज यह इंद्रधनुष ?
सीधे सादे तितलियाँ और चिड़ियाँ पूछा।
आज उनको रोशनी की ज़रूरत है,
तितलियाँ बने आम जनता घूमते है इस अंधेरे में।

जिस मन में रंगों के मेला थी,
उस मन आज बना काला रंग।
वह काले हाथों से,
तोड़ दिया तुम (मानव) एक-एक हृदय को।
तेरे मन के वर्ण के अभाव में
फैला दिया काला रंग तेरे बेटे के जीवन में थी।
जिसको तुम खिलौने का रंग दिखाना चाहता था,
उसे दिखाया खून की भयंकर लालिमा।
खाणी में काम करते बच्चे,
चाहते थे, किसी की करुणा बनी रोशनी को।
इनके मन में था ही नहीं खिलौने और किताब का रंग,
खा चुका था दीमकों ने उनके मन पहले ही।
धन्य किया एक जीवन को,
उसके सिर पर सिंदूर लगाने हुए।
लेकिन सोचो, क्या इस सिंदूर का गायब होना
बनाएँगे तेरी पत्नी को भस्म ?

PTO

नारी की कोमलता की धाग से,
खिलवाया उसे, तेरे काले हाथों से।
तेरे मन का उजाला की कमी,
फैलाया दर्द उसकी पूरी ज़िंदगी में।

आज आसमान बना एक काला दानव,
तोड़ दिया वह मिट्टी का हृदय।
सोचो तुमने कैसा करेगा,
वैसा ही मिलेगा तुम्हारे जीवन में।

पैदा हुए आज सूर्यपुत्रों,
आया एक सूर्योदय सभी के जीवन में।
जन्म लिया था उन्होने, इस धरती पर,
सभी की ज़िंदगी पर प्रकाश डालने को।

अन्य राष्ट्र में पैदा हुई एक छोटी लड़की (मलाला)
फैलाया शिक्षा का सुगंध लड़कियों के जीवन में।
बच्चों को सोना पंख देने केलिए,
आये एक 'पिता' सभी को सांत्वन देने हुए।

PTO

अंधेरे भरी इस दुनिया में,
चमकते तारे को देख सकते है।
ऐसे किसी हालत में भी,
मन का इंद्रधनुष गायब नही होता।

x——————x